रिकॉर्डः– तुम्हें पाके हम(ने)..... 10/5/1965

ओमशान्ति। शिव भगवानुवाच्य और कोई को भी भगवान नहीं (कहा) जाता। .... निराकार प०पि०प० को ही शिवबाबा कहा जाता है ..... सभी आत्माओं का बाप। पहले–2 यह निश्चय हो(ना) (चाहिए) हम शिवबाबा के बच्चे ज़रूर हैं। जब तक यह नहीं समझा है तब तक मनुष्य जानवर मिसल हैं। कंस–जरासंधी ..... अजामिल, शिशुपाल, कुम्भकरण आदि (यह) सब मनुष्यों के नाम रखे हुए हैं, जो बाप को नहीं जानते। भक्तिमार्ग में भक्त भगवान को याद करते हैं; परन्तु उनको जानते नहीं, इसलिए जानवर अथवा बन्दर मिसल ही है। दुख के समय कहते हैं हे राम सहायता करो, रहम करो। यह नहीं जानते कि हमारी आत्मा ..... बाप को याद करती है। अहम् आत्मा का बाप है। बाकी यह शरीर लौकिक का बनाया हुआ है। ..... का बना हुआ है; इसलिए इनको मूत–पलीती, भ्रष्टाचारी कहते हैं। इन बातों को दुनिया तो नहीं (जान)ती। वो समझाते ठगी–चोरी करना भ्रष्टाचारी है। बाप कहते हैं, पहला नम्बर पाप है एक/दो पर काम क(टारी) चला(ना)। ये है ही पतित पापात्मा की दुनिया। साधु–संत (आ)दि जो भी हैं यथा राजा सब पतित हैं। (पा)वन देवताएँ जो थे उन्हों के मंदिर बनाए पतित लोग नमन करते हैं। गाते हैं हम पापी, नीच हैं, आप सम्पूर्ण निर्विकारी... हो; परन्तु फिर भी अपन को समझते नहीं हैं। बाप बैठ समझाते हैं ..... तुम कहते हो भगवान बाप एक है तो तुम ..... आत्मा हो। भाई–2 हो गए। फिर .... (भाई)–बहन विकार में जा(ए) ना सके। विकार में जाने से ही तुम इतने दुखी .....। बाप कहते हैं एक/दो (को) मूत ना पि(लाओ)। ये विकारी दुनिया खतम होनी है। तुम (जो) भी क(र्तव्य) (कर)ते हो सब पाप ही करते हो। तुम्हारे लौकिक बाप भी पाप करते हैं। गुरु भी पाप करते हैं। बाकी सिर्फ टीचर (पाप नहीं) करते। वो शि(क्षा) देते, जिससे तुम्हारी हद की आमदनी होती है। ये तो फिर बेहद का बाप, टीचर, गुरु (है)। .... तो कहते हैं मैं तुमको पतित नहीं बना(ता) हूँ, मैं तुमको आया हूँ पावन बनाने। अगर मेरी मत पर (चलेंगे) तो। यहाँ तो मनुष्य मत पर हैं। ये है ही बन्दरों की दुनिया। बाप इन(को) बदल कर मंदिर लायक बनाते हैं। अब निराकारी बनो। श्रीमत पर चलो; परन्तु विकारों को छोड़ते नहीं तो स्वर्ग के मालिक भी नहीं (ब)नते। सब अजामिल, पापी बन गए हो। (रावण) सम्प्रदाय है। सब अशोक वाटिका (में) हैं। कितना दुखी हैं। बाप आए फिर राम राज बनते(बनाते) हैं। तुम बच्चे जानते (हो हम) आत्माएँ आपस में भाई–2 हैं। फिर प्रजापिता ब्र० के बच्चे, शिवबाबा के पौत्रे हो गए। पौत्रा–(पौत्रियाँ आपस) में विकार में जा ना सके। घर के बच्चे ठहरे ना। बाप का फरमान है पवित्र बनो। सच्चा–2 युद्ध का मैदान ये है। बाकी शास्त्रों में तो दंत कथाएँ हैं। गीता आदि शास्त्र ..... पढ़ते–2 ..... और ही पतित बन गए (हो)। गीता में भगवान कहते हैं काम महाशत्रु है। इन पर जीत पहनो सो तो पहनते (नहीं) हो। शास्त्र सुनाने वाले पद तो कुछ भी प्राप्त नहीं कराते हैं। सुनते–2 तुम और ही पतित (बन) पड़े हो। सब शास्त्र हैं झूठे। ये बाप बैठ समझाते हैं। तुम्हारी आत्मा इन ऑरगन्स द्वारा सुनती है, फिर सुनाती है। (एक्ट) आत्मा करती है हम **A** है, शरीर धारण कर पार्ट बजाती है; परन्तु मनुष्य आत्मा–अभिमानी के बदली देह–अभिमानी बन गए हैं। अब बाप कहते हैं देही–अभिमानी बनो। सतयुग (में) (तुम) आत्मा–अभिमानी रहते हो। परमात्मा को नहीं जानते हो। यहाँ तुम देह–अभिमानी हो और परमात्मा को भी जानते हो; इसलिए तुम्हारी ऐसी दुर्गति हुई है। दुर्गति (को) भी समझते नहीं। जिन पास धन जास्ती है तो वो समझते हैं हम स्वर्ग में बैठे हैं। बाप कहते हैं ये सब गरीब बन जाते हैं; क्योंकि विनाश होना है। 8/10 वर्ष मुश्किल चलेगा। विनाश करना यह तो अच्छा है ना। हम फिर तुमको साथ ले जावेंगे। इसमें तो खुश होना ... चाहिए। तुम मरने लिए तैयारी कर रहे हो। मनुष्य तो मरने (से) डरते हैं। बाप तुमको वैकुण्ठ ले चलने लिए लायक बना रहे हैं। पतित तो पतित दुनिया में जन्म लेते रहते। स्वर्गवासी कोई भी नहीं होते। मूल बात बाप कहते हैं, पवित्र बनने सिवाय पवित्र दुनिया में चल ना सकेंगे। पवित्रता पर ही अबलाओं पर मार पड़ती है। विख को अमृत समझते हैं। बाप कहते हैं ज्ञान अमृत से तुमको हीरे जैसा बनाता हूँ, तुम फिर विख खाए कर कौड़ी जैसा (क्यों) बनते हो? आधा कल्प तुमने विख खाई है, अब मेरी आज्ञा मानो, नहीं तो धर्मराज के बहुत डण्डे खाने पड़ेंगे। लौकिक बाप भी कहते हैं ना ऐसा का(म) ना करो जो कुल का नाम बदनाम हो। बेहद का बाप भी बच्चों को कहते हैं श्रीमत पर चलो, पवित्र बनो। अगर काम चि(क्षा) पर बैठे तो तुम्हा(रा) मुँह काला है ही, और ही काला हो जावेगा। अभी तुमको ज्ञान चि(क्षा) पर बिठाते हैं गोरा बनाने। स्वर्ग का वर्सा देने आए हैं। कलियुग अब पूरा होना है। साधु–संत, विद्वान–पंडित .....(चार लाइन कटी हुई है) .....

.....

.....

.....

पर चलो। विकार में गए तो ये मेरे। फिर ..... पिछाड़ी में स्वर्ग में आवेंगे तो भी बहुत हल्का पद पावेंगे। अभी जो साहुकार हैं वो गरीब बन जाने हैं। (जो) यहाँ गरीब हैं वे साहुकार बनना है। बाप गरीब निवा... है। सारा मदार पवित्रता पर है। बाप के साथ योग लगाने से तुम पावन बनोगे। सन्यासी लोग कोई पावन नहीं। वो खुद भी गंगा स्नान आदि करते रहते हैं। गाते रहते हैं पतित–पावन..... गंगा स्नान आदि (करते)–2 और ही दुर्गति को पाया है। बाप बैठ यह समझाते हैं मैं तुम बच्चों को राजयोग सिखाता हूँ। मैं घरबार नहीं छुड़ाता हूँ। भल घर में रहो; परन्तु विकार में मत जाओ और कोई भी देहधारी मनुष्य को याद ना करो। ये सब पतित हैं। ल०ना० भी जो पवित्र सतयुग के मालिक थे इस समय वह भी (पति)त हैं। यथा राजा..... पुनर्जन्म यहाँ ही लेते–2 अब अन्तिम जन्म हो ग(या) है। बाप कहते हैं, तुम्हारा यह बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है। तुम सब पार्वतियाँ हो। तुमको अमरकथा सुना रहे (हैं) अमरपुरी का मालिक बना(ने)। (तो) अब अमर बाप को याद करो। याद से ही तुम्हारा विकर्म विनाश होंगे। बाकी शिव या शंकर, पार्वतियाँ कोई पहाड़ों पर बैठे नहीं हैं। ये सब ... भक्तिमार्ग के धक्के खाए हैं। अब बाप कहते हैं हम तुमको स्वर्ग में ले जाते हैं। भक्ति में धक्के भी खाते हैं। नर्क में भी गिरते हैं। सतयुग में तो सुख ही सुख है– ना धक्के खाते, ना गिरते हैं। नम्बरवन बात की पवित्र रहते हैं। अपवित्र दुशासन लोग अपवित्र करने बिगर छोड़ते नहीं। कहते हैं हमें तो विख चाहिए। हम देवता बन(ना) नहीं चाहते। जब बहुत अत्याचार करते हैं तो पाप का घड़ा भर जाता है और विनाश होता है। बाप कहते हैं यह पाप की दुनिया अब खतम होनी है। आधा कल्प तुमने धक्के खाए हैं, अब एक जन्म पवित्र बनो तो तुम पवित्र दुनिया (के) मालिक बन सकते हो। अब जो श्रीमत पर चलें। कल्प पहले ना चले हैं तो अब ना चलेंगे, ना पद पावेंगे। एक बाप के बच्चे तुम तो आपस में भाई–बहन हो गए। सब प्रजापिता बी०के०कुमारियाँ ठहरे। अगर विकार में जावेंगे तो रसात(ल) (में) चले जावेंगे। रसातल में तो हैं। बाप का फिर बन गिरे तो और ही पापात्मा बन पड़ेंगे। यह ईश्वरीय (ग)वर्मेन्ट है। अगर मेरी मत पर चल पवित्र ना बने तो धर्मराज द्वारा बड़ी कड़ी सज़ा मिलेगी। जन्म–जन्मांतर के (पाप) किए हुए हैं ना। इन सबकी सज़ाएँ खानी पड़ेंगी। हिसाब चुक्तू करना होगा। या तो श्रीमत (पर) चल विकर्मों को भस्म करना है, नहीं तो फिर सज़ा खानी पड़ेगी। कितने ढेर बी०के०कुमारियाँ हैं। सब पवित्र (रह)ते हैं। भारत को ही स्वर्ग बनाते (हैं)। तुम हो शिव–शक्ति पांडव सेना। गोप–गोपियाँ दोनों इसमें .....ते हैं। भगवान तुमको पढ़ाते हैं। ल०ना० को भगवान गाते हैं ना। उन्हों को ज़रूर (भग)वान ने ही वर्सा दिया होगा। तुमको भी फिर ऐसा बनाता हूँ। शिवबाबा इनमें (गुप्त) है। ये भगवान नहीं। विकारी को कहा ही जाता है शैतान। अब मैं शैतानों को फिर भगवान ब(नाता) हूँ। माया रावण ने शैतान बनाया है, मैं आकर तुमको देवता बनाता हूँ। सतयुग में यथा राजा..... सब पवित्र, श्रेष्टाचारी थे। अब तो रावण राज्य है। अब राम राज्य में चलाना(चलना) है तो राम के मत पर चलो। रावण की मत (से) तुम्हारी दुर्गति हो गई है। गाया भी हुआ है किसकी दबी रहेगी धूर में..... सोना आदि दिवा(रों) के अन्दर, जमीन में छिपाते हैं। अचानक मरेंगे तो सब वहाँ ही रह जावेगा। विनाश तो होना ही है। अर्थक्वेक आ(दि) जब होती है तो चोर लोग भी बहुत निकते(निकालते) हैं। अभी तुम बंदर से मंदिर लायक बन रहे हो। साधु–संत आदि सबकी चलन जैसे बंदर मिसल है। बहुत विकारी हैं। कुत्ते–कुतरियाँ मिसल हैं। एक/दो को मारते–पीटते रहते हैं; क्योंकि निधणके हैं। धनी–धोरी कोई है नहीं। अब धनी बाप आए हैं, अपना बनाय तुम(को) विश्व (का) मालिक बनाते हैं। ..... तो वा(न)प्रस्थ अवस्था में भी विकार रह ना सके। बिल्कुल तमोप्रधान हो गए हैं। बाप को पहचानते नहीं हो। बाप कहते हैं मैं पवित्र बनाने आया हूँ। अगर विकार में जावेंगे तो बहुत कड़ी सज़ा भोगनी पड़ेगी। मैं पावन बनाने पवित्र दुनिया स्थापन करने आया हूँ, तुम फिर पतित बन (विघ्न) डालते हो, स्वर्ग की रचना करने में बाँधा डालते हो। तो बहुत सज़ा खानी प(ड़ेगी)। मैं आया हूँ तुमको स्वर्गवासी बनाने। अगर विकार ना छोड़ेंगे तो धर्मराज द्वारा मारे जावेंगे। बहुत त्राह–2 करनी पड़ेगी। ये इंद्रसभा की भी कहानी है ना। वहाँ ज्ञान परियाँ थीं। किसी पतित को ले आई तो उसका (वायब्रेशन) ..... था। यह सभा में किसी पतित को नहीं बिठाया जाता है। इसलिए जब तक पवित्रता की राखी ना बाँधी है तब तक ले नहीं सकता। वो कुछ समझ न(हीं) ..... । जैसा एक बंदर (बैठा) है। बाप तो जानते हैं ना, फिर भी ले आते हैं तो शिक्षा दी जाती है। शिवबाबा देखते हैं बंदर सभा बीच बैठा है तो फिर ब्राह्मणी को सावधानी दी जाती ऐसे–2 को ना ले आना चाहिए। इस समय है ही जानवरों की दुनिया। ये भी तुम जानते हो। मनुष्य नहीं समझ सकता। यहाँ कोई साधु–संत–महात्मा की बात नहीं। यहाँ तो पवित्रता की प्रतिज्ञा कराए फिर किसी को ले आ..... फिर बदल गया तो बहुत डण्डे खाने पड़ेंगे धर्म(राज) द्वारा। इसलिए बाप समझाते रहते हैं .....(पाँच लाइन कटी हुई हैं)..... .....गुडमॉर्निंग। ॐ।